अपन को आत्मा समझ बैठे हो? पहले–2 बच्चों को यही समझाया जाता है अपन को देही समझ बैठे हो या देह समझ बैठे हो। ऐसे प्रश्न सिवाय बाप के और कोई पूछ न सके। बाप ही पतित–पावन है। उनको कहा जाता है वर्ल्ड ऑलमाइटी। सर्व–शक्तिवान। फिर ऊँच ते ऊँच भगवान भी कहा जाता है। बाप जरूर ऊँच ते ऊँच पद प्राप्त करावेंगे। ऊँच ते ऊँच पद है यह ल0ना0 का। इस समय तो यह नहीं है। कहाँ गये दुनिया नहीं जान तुम जानते हो ल0ना0 इस सृष्टि के आदि सनातन देवी देवता थे। देवी देवता फिर भगवान भगवती भी कहा जाता है; क्योंकि भगवान ने पढ़ाया है देवी देवता बनने। तो उन्हों को कहा ही जाता है देवी देवताएँ न भगवान भगवती। उनको कहा ही जाता है डिटीज्म। इन्हों का राज्य यहाँ भारत में था। और कोई का राज्य नहीं। 84 जन्म लिये हैं देवता सो क्षत्री बने हैं। पुनर्जन्म लेते नाम–रूप–देश–काल बदलते–2 84 जन्म लेते हो। 84 जन्म के शरीर भी अलग, नाम भी अलग। यह बाप बैठ समझाते हैं। मनुष्य नहीं जानते। न शास्त्रों में यह बातें हैं। बेहद का बाप कब शास्त्र नहीं उठाते हैं। यहाँ बैठ नालेज देते हैं। अपनी और सृष्टि चक्र आदि, मध्य, अन्त का नालेज देते हैं। तुमने 84 जन्म कैसे लिये हैं। और कोई नहीं जानते मनुष्य 84 जन्म कैसे भोगते। वह तो 84 लाख कह देते। बाप समझाते हैं तुम पहले–2 सतोप्रधान थे। फिर सतो–रजो–तमो में आये। अभी फिर तमो से सतोप्रधान बनना पड़े। सृष्टि का चक्र फिरता है ना। पुरानी दुनिया बदल नई बनने का यह है पुरुषोत्तम संगमयुग फिर सतयुग, त्रेता..... यह चक्र है ना। इनको ही कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी रिपीट। बाप कहते हैं अभी फिर इन्हों का राज्य रिपीट होगा। तुम आये हो यह राज–भाग लेने। अभी तुम उत्तम पुरुष बनने पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। उत्तम पुरुष के दैवीगुण भी धारण करनी है। जो इन्हों की महिमा करते हैं वह है कलियुगी मनुष्य। अभी तुमको कौन बैठ समझाते हैं? वृक्षपति। उनको सद्गुरु कहा जाता है। बाप आकर इस सृष्टि को सच खण्ड बनाते हैं। सच खण्ड था अभी झूठ खण्ड हो गया है। झूठा और पतित संस्कार हैं। नई दुनिया को पावन संस्कार कहा जा... है। अभी है पतित पुरानी संस्कार। सो फिर पावन कैसे बने। भारत पतित है ना। उन्हों की महिमा गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न..... फिर नीचे उतरते–2 सम्पूर्ण विकारी बन पड़ते हैं। गाते भी हैं पापी, नीच हैं। हम जन्म जन्मान्तर के पापी हैं। किसके आगे कहते हो? भगवान के आगे। भगवान एक निराकार है। वह है सभी आत्माओं का बाप। पूजा कौन करते हैं। आत्माएँ परमपिता परमात्मा की पूजा करती हैं। शिव के मंदिर में जाते हैं। शिवबाबा कहा जाता है ना। एक है साकार बाबा दूसरा है निराकार। वह है रूहानी बाप। सभी रूहों का बाप। सभी रूहों का एक बाप। सभी कहते हैं हम भाई2 हैं। अंग्रेजी में ब्रदरहुड कहा जाता है। फादर एक चाहिए। फादर से वरसा यह मिलता है। बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं ना। तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने पढ़ाते हैं। बाप बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। मनुष्य कब ऐसे हो न सके। बाप, टीचर, गुरु एक को कब कह न सके। देहधारी कब हो न सके। विदेही जो सभी का बाप है वही बाप भी, टीचर भी, है सद्गुरु भी है। मनुष्य से देवता बनाने लिए पढ़ा रहे हैं। पवित्र बनाने लिए ही समझाते हैं। आधा कल्प तुम सतोप्रधान थे। अभी हो तमोप्रधान। आत्मा ही तमोप्रधान बनी है। पहले होते हैं सतोप्रधान फिर होते हैं तमोप्रधान। अभी यह तो सभी बातें बुद्धि में रखनी है। हम सतोप्रधान थे। फिर पुनर्जन्म ले त्रेता में आये तो सतोप्रधान बने फिर 21 पुनर्जन्म ले रजो में आये। सीढ़ी है ना। यह सीढ़ी भी श्रीमत पर बनी। चित्र भी श्रीमत पर बने हैं ना। बाप कहते हैं मैं इस जन्म इसके बहुत जन्मों के अन्त में वाले जन्म में प्रवेश करता हूँ। यह है बेहद का सन्यास। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया विनाश होनी है। पुरानी दुनिया का बुद्धि से त्याग करते हो। अभी तुम अपन को आत्मा समझ एक बाप को याद करते हो। कोई भी देह को याद नहीं करना है। देह सहित सभी विनाश हो जावेंगे। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पुण्यात्मा बन मेरे पास आ जावेंगे। .....

बन्द हो जायेगा तो फिर लड़ाई लगेगी। फिर जाना होगा। अभी तुम काले से गोरे बनते हो। कृष्ण को श्यामसुन्दर कहते हैं ना। नई सृष्टि में पहला नम्बर है श्री कृष्ण प्रिन्स स्वर्ग का। फिर मालिक बनते हैं, महाराजा बनते हैं। फिर पुनर्जन्म लेते2 देवता, क्षत्री, वैश्य शूद्र बनते हैं। सो फिर अभी ब्राह्मण बना है। सतोप्रधान सतो रजो तमो में आते हैं। फिर सांवरे को गोरा बनाने वाला बाप ही है। जो एवर पान है। बाकी देहधारी सभी पुनर्जन्म जरूर लेते हैं। बाप कहते हैं मैं गर्भ में नहीं आता हूँ। मैं आता ही हूँ साधारण तन में। पतित राज्य पतित शरीर में प्रवेश कर इनको अपना बनाता हूँ। सन्यास कराता हूँ। सन्यास के बाद नाम बदली होता है। सन्यासी का भी नाम फिरता है। गुरु नाम रखता है। तुम्हारा नाम बेहद के बाप ने रखा है। तुम्हारा है बेहद का सन्यास, उनका है हद का। वह बेहद का सन्यास सिखला न सके; क्योंकि वह हैं निवृत्ति मार्ग वाले। तुम पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे फिर अपवित्र बने हो। पवित्र बनने लिए बाप राखी बांधवाते हैं। काम को जीतो, पावन बनो। गोरा भी बनना है। पावन बनते2 विकार में गये तो काला मुँह हो गया। विकार है कामाग्नि। तो अग्नि में जलने से मनुष्य काले हो जाते हैं। इसलिए सांवरा कहा जाता है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। ऐसे अनेक बार तुम पतित से पावन, पावन से पतित बनते ही आते हो। यह चक्र फिरता ही रहता है कब बन्द नहीं होना नहीं है। यह हार जीत का खेल है। आधा कल्प जीत आधा कल्प हार। भक्तिमार्ग वाले बाप को जानते ही नहीं। इसलिए निधण के हैं। भक्ति करते हैं अन्धश्रद्धा की। कोई को जानते ही नहीं। पूजा करते; परन्तु जीवन कहानी को नहीं जानते तो कहेंगे अन्धश्रद्धा। अन्धा बनाती है रावण। इसलिए बाप ने कहा है अंधे के औलाद अंधे। तुम शिवबाबा को भी जानते हो। ऊँच ते ऊँच बाप। फिर हैं ल0ना0। वही 84 जन्मों बाद देवता सो क्षत्री, वैश्य, शूद्र बनते हैं। हम आत्मा अभी ब्राह्मण हैं फिर हम आत्मा सो देवता फिर हम आत्मा सो क्षत्री..... बनेंगे। यह चक्र को जानने और पवित्र बनने से तुम यह पद पा सकते हो। यहाँ बैठे भी बाप को याद करना है और 84 के चक्र को, घर को, राजधानी को याद करना है। यह नालेज कोई मनुष्य नहीं समझा सकते। बाप ही बैठ समझाते हैं। वह है ज्ञान का सागर, सुख शान्ति का सागर एक को ही कहा जाता है। देवताओं की महिमा अलग हैं। ऊँच ते ऊँच बाप की महिमा भी ऊँच ते ऊँच है। वह ज्ञान का सागर है। तुमको नास्तिक से आस्तिक बनाते हैं। ज्ञान से सदगति, भक्ति से होती है दुर्गति। बाप कहते हैं मैं तुमको सद्गति दे जाता हूँ। फिर दुर्गति कैसे होती है। बाप ही बैठ सब राज़ समझाते हैं। बाप आत्माओं को समझाते हैं। आत्माएँ ही सुनती हैं। मनुष्य कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। बाप समझाते हैं 5 विकारी सर्वव्यापी हैं। देवताओं में 5 विकार होते ही नहीं। जिनमें 5 विकार हैं उनको आसुरी सम्प्रदाय कहा जाता है। खान–पान, चलन आदि देवताओं से बिल्कुल ही न्यारी है। बच्चों को धारणा भी बहुत अच्छी रखनी चाहिए। इसमें अन्तर्मुखता बहुत चाहिए। शान्त रहना है। मुख से कुछ बोलना न है। पहले तो जरूर समझाना पड़ता है फिर बस। बाप और वरसा यह ही याद रखना है। बाप द्वारा हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो दैवी गुण भी जरूर धारण करनी है। देवताएँ बीड़ी थोड़े ही पीते हैं। कहते हैं क्या करे, न पीने से पेट में दर्द पड़ता है। फिर अगर दर्द पड़ता है तो देवता तो बन न सकेंगे। इतना घाटा पड़ जावेगा। जन्म–जन्मान्तर का पद भ्रष्ट हो जावेंगे। यह सभी है वह ..... आदत पड़ जाती है। विकार की आदत कितनी खराब है। बहुत गंद है। इसको कहा ही जाता है वैश्यालय; क्योंकि विकार में जाते हैं। शिवालय में विकार होते ही नहीं। इसलिए बाबा ने पर्चे छपवाई थी कलियुगी वैश्यालय में हो या सतयुगी शिवालय में हो? दिन प्रतिदिन अच्छी समझाने की युक्तियाँ निकालते जाते हैं। बन्दरों को रत्न दो तो भी फेंक देते। जो बन्दर थे उन्हों को बाप मंदिर लायक बनाते हैं। रावण पर जीत पहनाते हैं। शास्त्रों में क्या2 बैठ लिखा है। बन्दरों की सैना ने पुल बांधी। यह क्या। पुल अभी तुम बांध रहे हो उस पार जाने लिए बाकी उन बन्दरों की बात थोड़े ही है। यह सारी दुनिया बेहद की लंका है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।